Class X

पाठ 1 पद

प्रश्नोत्तर [Assignment]

प्रश्न 1- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में वक्रोक्ति है। प्रत्यक्ष में तो ऐसा लग रहा है कि ये गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान कह रही है परन्तु अप्रत्यक्ष में वे उद्धव को दुर्भाग्यशाली कहना चाह रही हैं कि तुम बड़े अभागे हो कि कृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम का अनुभव नहीं कर सके। इस प्रकार गोपियाँ उनको भाग्यवान कहकर वास्तव में दुर्भाग्यशाली कहती है।

2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किससे-किससे की गई है?

उत्तर- उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्न दो चीजों से की गई है—

1. कमल के पत्ते से जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते।
2. तेल युक्त घड़े से जो जल में डुबने पर भी जल से अप्रभावित रहती है अर्थात जल का उस घड़े पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर- गोपियों ने निम्न उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं—

1. उनकी प्रेम भावना उनके मन में ही रह गई। वे न तो कृष्ण से अपनी बात कह पाई न किसी अन्य से ही कह पाती हैं।

2 वे कृष्ण के आने का इंतजार में ही जी रही थी किंतु कृष्ण ने स्वयं न आकर योगसंदेश भिजवा दिया। इससे उनकी विरह व्यथा और अधिक बढ़ गई है।

3 वे कृष्ण से रास की गुहार लगाना चाह रही थी, परंतु वहीं से योग संदेश की धारा को आया देखकर उनका दिल टूट गया।

4 वे कृष्ण से अपेक्षा करती थीं कि उनके प्रेम की मर्यादा को रखेंगे तथा उनके प्रेम का बदला प्रेम से देंगे किंतु उन्होंने योग संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा ही तोड़ डाली।

प्रश्न 4 उद्धव द्वारा दिए गए योग-संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर — गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम था श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने से गोपियाँ विरह की अग्नि में जल रही थी। उद्धव ने उन्हें योग संदेश देकर उनकी विरह की अग्नि को और अधिक बढ़ा दिया। उन्हें आशा थी कि कृष्ण लौटकर आएँगे। इसी उम्मीद में वे तन और मन का विरह सह रही थी परन्तु कृष्ण ने उद्धव द्वारा योग संदेश भिजवा दिया जिससे उनकी विरहाग्नि में योग संदेश ने घी का काम किया अर्थात् विरहाग्नि को और अधिक तीव्र कर दिया।

प्रश्न 5 — 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर — 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहने की बात की गई है। प्रेम की यही मर्यादा है कि इसे प्रेमी और प्रेमिका दोनों निभाएँ। वे प्रेम की सच्ची भावना को समझें और उसकी मर्यादा की रक्षा करें परंतु कृष्ण ने गोपियों से प्रेम निभाने के स्थान पर उनके लिए नीरस योग संदेश भेज दिया जो कि एक छलावा था। इसी छल को गोपियों ने मर्यादा

का उल्लंघन कहा है।

6- कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उ- कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने निम्न प्रकार अभिव्यक्त किया है?

1. वे स्वयं को कृष्ण रूपी गुड़ पर लिपटी हुई चीटिंयाँ कहती हैं।
2. वे स्वयं को हारिल पक्षी एवं कृष्ण को हारिल पक्षी के पैर में पकड़े लकड़ी रूपी आश्रय के रूप में मानती हैं।
3. वे कहती है कि उन्होंने मन, कर्म और वचन से कृष्ण को दृढ़ता से अपने मन में धारण किया है।
4. वे जागते-सोते, दिन-रात यहाँ तक कि स्वप्न में भी कृष्ण की रट लगाया करती हैं।
5. वे कृष्ण के प्रेम में इतनी मग्न हैं कि उद्धव के योग संदेश को कड़वी ककड़ी बताकर तीखी आलोचना करती हैं।

7- गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उ- गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है जिनका मन स्थिर नहीं है बल्कि भटकाव है। गोपियां तो एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास करती हैं। उनकी यह सोच है कि वे मन, कर्म वचन से केवल कृष्ण के प्रेम में अनुरक्त है उनके लिए तो योग की शिक्षा कड़वी ककड़ी के समान है अतः वे इसे चंचल मन वाले लोगों को देने को कहती हैं।

प्रश्न 8– प्रस्तुत पदों के आधार गोपियों का योगसाधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर– गोपियों का योगसाधना के प्रति दृष्टिकोण यह है कि गोपियाँ योगसाधना को नीरस, व्यर्थ और अव्यावहारिक मानती है। उनके अनुसार स्नेह बंधन में बँधे हृदय पर अन्य किसी उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उनका कहना है कि योगसाधना प्रेम का स्थान नहीं ले सकती। प्रेमीजन योगमार्ग द्वारा नहीं बल्कि प्रेमपूर्ण समर्पण के बल पर ही ईश्वर को पा सकते हैं। योग साधना तो उनके प्रेम की दीवानगी में बाधा है। योग संदेश उन्हें कड़वी ककड़ी की तरह प्रतीत होता है तथा योग संदेश सुनकर उनकी विरहाग्नि और तीव्र हो उठती है।

प्र.9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर– गोपियों के अनुसार राजा का निम्न धर्म होना चाहिए-

1. प्रजा की रक्षा करे।
2. प्रजा को संत्रस्त न करे, अपितु उसे अन्याय से मुक्ति दिलाए।
3. प्रजा की भलाई के विषय में सोचे तथा उन्हें सताए जाने से रोके।

प्र.10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर– उद्धव का योग संदेश सुनकर गोपियों को लगा कि कृष्ण मथुरा जाकर बदल गए हैं। वे अब गोपियों से प्रेम नहीं करते तथा उन्होंने राजनीति भी पढ़ ली जिसके कारण वह छल-प्रपंच का सहारा लेने लगे हैं। यही कारण है कि उन्होंने योग संदेश भिजवा दिया है। इन परिवर्तनों को देखते हुए गोपियों

को लगा कि जाते समय जो उनका मन कृष्ण चुरा कर ले गए थे अर्थात कृष्ण के प्रेम में डूबा हुआ मन अब उन्हें वापस मिल जाएगा।

प्र०11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- इसमें कोई संदेह नहीं कि गोपियाँ वाक्चतुर हैं। उनकी वाक्पटुता उद्धव को चुप रहने के लिए विवश कर देती है तथा वे गोपियों की वाक्पटुता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। उनकी वाक्चातुर्य की निम्न विशेषताएँ हैं—

1. **स्पष्टवादिता—** गोपियाँ किसी भी बात को स्पष्ट रूप से कहती हैं तभी तो वे योग संदेश को कड़वी ककड़ी एवं बीमारी कहने में संकोच नहीं करती।

2. **व्यंग्यात्मकता—** गोपियाँ व्यंग्यात्मकता का गुण होने के कारण ही उद्धव की भाग्यहीनता को भाग्यवान कहती हैं।

3. **सहृदयता—** गोपियों की सहृदयता उनकी बातों में स्पष्ट झलकती है तभी तो वे कहती हैं— 'मन की मन ही माँझ रही।'

प्रश्न12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए—

उत्तर- सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं—

1. इसमें गोपियों का कृष्ण के प्रति निर्मल प्रेम प्रकट हुआ है। वे कृष्ण की अनन्य भक्त हैं।
2. भ्रमरगीत में व्यंग्य, उलाहना, निराशा, प्रार्थना, गुहार आदि अनेक मनोभावों का संकलन है।

4. योग और प्रेम मार्ग का तुलनात्मक दिखाया गया है तथा योग की अपेक्षा प्रेममार्ग को उत्तम दिखाया गया है।
4. ब्रजभाषा की कोमलता एवं सरसता के दर्शन होते हैं।
5. शृंगार रस के अंतर्गत वियोग शृंगार का वर्णन किया गया है।
6. एक निष्ठ प्रेम का दर्शन है।
7. इन पदों में कृष्ण परदे के पीछे रहते हैं। गोपियाँ उद्धव के सामने खुलकर अपनी उलाहना प्रकट करती हैं।

प्रश्न 13- गोपियों ने उद्धव के सामने तरह तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर- इसमें कोई संदेह नहीं कि गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए। हमारे अनुसार और भी तर्क निम्न हो सकते थे।

1. हे उद्धव! हमारे पास एक ही मन था, जिसे हमने कृष्ण को समर्पित कर दिया है। अब निर्गुण ब्रह्म का ध्यान किस मन से करें।
2. यदि योग इतना ही महत्त्वपूर्ण होता तो श्रीकृष्ण ने उनसे पहले प्रेम ही क्यों किया?
3. यदि हमें मालूम होता कि कृष्ण का प्रेम नाटकीय है तो हम अपना मन समर्पित कर आज इतना व्यथित क्यों होते।

प्रश्न 14- उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन सी शक्ति थी जो उनके वाग्जाल में मुखरित हो उठी?

उत्तर- उद्धव ज्ञानी थे परंतु उन्हें व्यावहारिकता का अनुभव नहीं था। प्रेम के क्षेत्र में तो वह पूर्णतः अनभिज्ञ थे। गोपियों ने कहा भी है- "प्रीति नई मैं पाऊँ न बोरयौ"-

व्यावहारिक ज्ञान के अभाव में गोपियों की वाक्पटुता के सम्मुख उद्धव को विवश होकर चुप होना पड़ा। चूंकि गोपियों के हृदय में कृष्ण-प्रेम का सच्चा ज्वार है, यही उमड़ाव, यही आवेग उद्धव की बोलती बंद कर देता है। सच्चे प्रेम में इतनी शक्ति होती है कि बड़े से बड़ा ज्ञानी भी उसके सामने घुटने टेक देता है।

गृह-कार्य

प्रश्न 15— गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नजर आता है, स्पष्ट कीजिए।